SHRI S.S. AHLUWALIA: I should get an opportunity to speak.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Then I will put that at the end. This is not fair.

श्री दिग्विजय सिंह: मैडम, यह जीरो अवर में लेंगे या गल मेंशन में, यह तय कर दीजिए।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Because you d not take a decision on such a schme, Zero r is over. This House cannot take a decision n it should be taken. The person has given t issue. He has raised it many times. He has ght to speak. How can others interfere with nim? (*Interruptions*) Then let him speak. बोलने दो उन को। देखिए 23 आदमी नहीं बोल सकते। चैयरमेन साहब ने नहीं बोला है, इसलिए मैं अलाउ नहीं कर सकती। I cannot allow you. You better take his permission.

SHRI S.S. AHLUWALIA: You kindly see the paper. My signature is also there.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I cannot take the right of other members. जिन्होंने आठ-आठ दिन से स्पेशनल मेंशंस दिए हैं और एक दिन नहीं हुआ, आज नहीं होगा कल होगा, परसों होगा, इसलिए-

They come and put their grievances before the Chairman and me. You have see just now the Members came and asked me, from this side, this side and this side. How can we adjust this? It is humanly not possible to allow 23 people to speak on a subject and then still allow the Special Mention. Nobody wants to speak in the night. Either you take a decision that you will sit in the evening and discuss this matter threadbare or you allow him to speak. That is all. That is why the Chairman, in his wisdon, has said that all the names should be read out. That is all. (*Interruptions*)

AN HON. MEMBER: Why?

THE DEPUTY CHAIRMAN: I do not know. I am not questioning the Chairman's wisdom.

श्री ईश दत्त यादव: मैडम, एक-एक मिनिट दे दीजिए।

उपसभापति: आप बैठिए। मेरी रूलिंग के बाद कुछ नहीं होगा। बैठ जाइए। I am not allowing. No.

आप लोग बीच में बहस कर के हाउस का समय बरबाद करते हैं।

RE. NON-REPRESENTATION OF MINORITY COMMUNITIES IN N.S.G.

श्री मोहम्मद अफ़ज़ल उर्फ मीम अफ़ज़ल (उत्तर प्रदेश): मैडम, हमारा मुल्क एक सेकुलर मुल्क है। इस सेकुलर मुल्क में सब वर्ग के लोग रहते हैं। हम यह उम्मीद करते हैं कि चाहे राज्य सरकार हो या मर्कजी सरकार हो, वहां जो भी काम हो उसके काम में कोई ऐसा तरीका नजर नहीं आना चाहिए, जिससे यह महसूस हो कि किसी एक मकसूस वर्ग के लोगों को आइसोलेट किया जा रहा है, अलग किया जा रहा है।

मैडम, एक रिपोर्ट इकोनोमिक्स टाइम्स में 23 जुलाई को छपी है और उसका आज तक कोई डिनायल नहीं आया है। इस सिलसिले में मैं आपको बताना नहीं चाहता हूं, मैंने बहुत हाई लेवल पर कोशिश की कि या तो इसका डिनायल आ जाए या कोई इसका वह आ जाए। चूंकि मैं ईमानदारी से यह महसूस करता हूं कि यह बहुत सेन्सटिव मामला है और हर मामले को भी सदन में नहीं उठाना चाहिए, लेकिन जब देख लिया कि सरकार कुछ करने के लिए तैयार नहीं है तब मैं इसे लेकर सदन में आया और बहुत कोशिश के बाद इस मामले को उठाने की इजाजत मिली। इस पर हमारे 23 एम.पीज. ने दस्तखत किए हैं, बहुत सीनियर लोगों ने दस्तखत किए हैं और तकरीबन सभी पोलिटिकल पार्टी के लोग हैं इसके अंदर।

मैडम, इस 23 जुलाई की रिपोर्ट में कहा गया है कि एन.एस.जी., नेशनल सिक्योरिटी गार्ड, जो हमारी वी.आई.पी.ज. की हिफाजत का बंदोबस्त करती हैं, उसमें सिर्फ एक वर्ग के लोगों को शामिल किया जा रहा है, मेजोरिटी कम्युनिटी के लोगों को और बाकी जितने भी अकलियत के लोग हैं, चाहे वह मुसलमान हैं, चाहे वह सिख हैं, चाहे वह ईसाई हैं, चाहे वह बौद्ध हैं, चाहे जैनी भी हैं, मैं समझता हूं, उन सबको नजरअंदाज करके एक ही तरह की फौज बनाई जा रही है। इसमें और भी बहुत सारी डिटेलस हैं, अखबार की सारी रिपोर्ट में मैं नहीं जाना चाहता कि उसमें ट्रेनिंग किस तरह से हो रही है, या क्या हो रहा है। यह बात जरूर चौंका देने वाली है। एक सेकुलर मुल्क में अगर सिक्योरिटी और वी.आय.पीज़ की सिक्योरिटी में सेलेक्टिव तरीके से काम किया जाएगा तो फिर इस मुल्क में जो अकलियत हैं उनको अगर आइसोलेट करेंगे तो उनका एतमाद सरकार में और देश के जो दूसरे काम चल रहे हैं उसमें, कैसे बहाल होगा? इसके बारे में मैं आपको यह बताना चाहूंगा कि इसका डिनायल इसलिए नहीं आएगा क्योंकि खुद डायरेक्टर जनरल ने, जो एन.एस.जी. के हैं, खुद इस अखबार से बातचीत की है। इसमें 7400 लोगों को अब तक दूसरी जगहों से लिया गया है, कोई डायरेक्ट एपायंटमेंट नहीं होती। शायद स्टेट भेजती है और सेंट्रल उसको मोबेलाइज करती है। जो हमारे डायरेक्टर जनरल, एन.एस.जी. फरमाते हैं-

میڈم - اس ۲۳ جولائی رپورٹ میں کہا گیا ہے کہ این - ایس - جی - نیشنل سیکیورٹی گارڈ جو ہمارے وی - آئی - پیز کی حفاظت کا بندوبست کرتی ہے اسمیں صرف ایک ورگ کے لوگوں کو شامل کیا جا رہا ہے میجارٹی کمیونٹی کے لوگوں کو اور باقی جتنے بھی اقلیت کے لوگ ہیں - چاہے وہ مسلمان ہیں - چاہے وہ سکھ ہیں - چاہے وہ عیسائی ہیں - چاہے وہ بودھ ہیں - چاہے وہ جینی بھی ہیں - میں سمجھتا ہوں ان سب کو نظر انداز کر کے ایک طرح کی فوج بنائی جا رہی ہے اسمیں اور بہت ساری ایشوز ہیں اخباری ساری رپورٹ میں میں نہیں جانا چاہتا ہوں کہ اسمیں ٹریننگ کس طرح سے ہو رہی ہے - کیا کیا ہو رہا ہے - یہ بات ضرور چونکا دینے والی ہے ایک سیکولر ملک میں اگر سیکیورٹی اور وی - آئی - پیز کی سیکیورٹی میں سلیکٹو طریقے سے کام کیا جائیگا تو پھر اس ملک میں جو اقلیت ہے انکو اگر "آئسولیٹ" کریں گے تو انکا اعتماد سرکار میں اور دیش کے دوسرے کام چل رہے ہیں اسمیں کیسے بحال ہوگا - اسکے بارے میں میں آپکو یہ بتانا چاہونگا کہ اسکا ڈینائل اسلئے نہیں آئیگا کیونکہ خود گائر کر جنرل نے جو این - ایس - جی - کے ہیں خود اس اخبار سے بات چیت کی ہے

[]شری محمد افضل عرف م - افضل امانوللہ:

میڈم - ہمارا ملک ایک سیکولر ملک ہے - اس سیکولر ملک میں سب ورگ کے لوگ رہتے ہیں - ہم یہ امید کرتے ہیں کہ چاہے راجیہ سرکار ہو یا مرکزی سرکار ہو وہاں جو بھی کام ہو اسکے کام میں کوئی طریقہ نظر نہیں آنا چاہئے جس سے یہ محسوس ہو کہ کسی ایک مخصوص ورگ کے لوگوں کو "آئسولیٹ" کیا جا رہا ہے -

میڈم - ایک رپورٹ "اکنامک ٹائمز" میں ۲۳ جولائی کو چھپی ہے اور اسکا آبجیکٹ کوئی "ڈینائل" نہیں آیا اس سلسلہ میں آپکو بتانا نہیں چاہتا ہوں میں نے بہت ہائی لیول پر کوشش کی کہ یا تو اسکا "ڈینائل" آجائے یا کوئی اسکا وہ آجائے کیونکہ میں ایمانداری سے یہ محسوس کرتا ہوں کہ بہت "سینسیٹو" معاملہ ہے اور ہر معاملہ کو سدن میں نہیں اٹھانا چاہئے لیکن جب دیکھ لیا کہ سرکار کچھ کرنے کیلئے تیار نہیں ہے تب میں اسے لیکر سدن میں آیا اور بہت کوشش کے بعد اس معاملہ کو اٹھانے کی اجازت ملی - اس پر ہمارے ۲۳ ایم پیز نے دستخط کئے ہیں - بہت سینئر لوگوں نے دستخط کئے ہیں اور تقریباً سبھی پولیٹیکل پارٹیز کے لوگ ہیں اسکے اندر [

[]Transliteration in Arabic script.

اسمیں ۱۰۰ لوگوں کو ابتک دوسری جگہ سے
لیا گیا ہے - کوئی ڈائرکٹ / پاٹلمنٹ نہیں
ہوئی - شاید اسیٹ بھیجتی ہے اور سنٹرل
اسکو موبیلائز کرتی ہے تو ہمارا ڈائرکٹر
جنرل این - ایس - جی - فرماتے ہیں :]

"We take them strictly according to their qualifications, whoever fits into our qualitative requirement. They should be young, physically fit, mentally alert and proficient in firing." When asked whether the organisation possesses anybody other than the majority community, he admits, "There is nobody."

यानि मैजोरिटी कम्युनिटी के अलावा किसी भी शख्स को नहीं लिया जा रहा है। इसमें बहुत सारी बातें लिखी हैं। मैं इसकी डिटेल में नहीं जाना चाहता और मुनासिब भी नहीं समझता, लेकिन डायरेक्टर जनरल ने यह इंटरव्यू दिया है। मैंने सरकार के एक वजीर को जब यह बात बताई तो उन्होंने जिम्मेदारी के साथ कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। उन बेचारों ने कोशिश भी की कि इसको डिनाई किया जाए, मगर डिनाई नहीं करा सके अपनी कोशिशों के बावजूद।

मैडम, ऐसा नहीं है कि हम सीधे सदन में आ गए इस मामले को लेकर, जो कोशिश कर सकते थे वह की और जब डिनायल नहीं हुआ तो सोचा कि इसको देश के सामने रखना चाहिए। मैं आपको याद दिला दूं, जब 1947 में हिन्दुस्तान आजाद हुआ तो उसके बाद गवर्नमेंट का एक आर्डर था, 1982 में एक जर्नलिस्ट की हैसियत से उस गवर्नमेंट आर्डर की एक कापी मुझे कहां से मिली और मैंने उसे अखबार में साया किया, जिसमें कहा गया था कि किसी सेन्सटिव पोस्ट पर माइनोरिटी या मुसलमानों को नहीं रखा जाए। "मुसलमान" लफ्ज का उसमें इस्तेमाल हुआ था। मिसेज इन्दिरा गांधी को जब यह बात पता लगी और उनकी नालेज में आई तो उन्होंने फौरन उसको बिदड्रा किया और उसको खतम किया।

मैडम, अब अकलियतों पर एतमाद करने की बात उठती है, उनके एतमाद लेने की बात उठती है, मैं आपको याद दिलाऊं कि हमारी सरकार, जनता दल की सरकार के दौरान वजीरे आज़म वी.पी.सिंह साहब थे। उन्होंने अकलियत फिरके के आदमी को वजीरे-दाखला बनाया था। इक पूरा एतमाद देने की कोशिश की कि अकलियत यह न समझे कि वह कोई आइसोलेट हो रहे हैं। मैं कोई बड़ाई नहीं कर रहा, सिर्फ एक बात कहना चाह रहा हूं कि कुछ लोग इस अंदाज से भी सोचते हैं। एक तरफ एक सरकार सोचती है कि अकलियतों के किसी आदमी को वजीरे-दाखला बनाए ताकि उनका एतमाद बहाल हो, वह मुल्क के जो काम हैं उनमें बराबरी से अपना हिस्सा बटाए और दूसरी तरफ इन्दिरा जी का आर्डर वाला मिसाल है। मैं समझता हूं कि इन्दिरा जी ने एक कारनामा किया था उस वक्त और उन्होंने एक अच्छा डिसीजन लिया था।... लेकिन दूसरी तरफ सरकार एक सिक्युरिटी फोर्स के अंदर एक किस्म का सिलेक्टिव करे तो यह बात न सिर्फ सैकुलरिज्म के मुतरादिफ है, सैकुलर क़दरों के मुतरादिफ है, कांस्टीटयूशन की दफा 16(2) के भी खिलाफ है, जिसमें कहा गया कि:-

"No citizen shall, on grounds only of religion, caste, sex, descent, place of birth, residence or any of them, be ineligible for, or discriminated against in respect of, any employment or office under the State.

मैडम, यह कांस्टीटयूशन का खुला उल्लंघन है, कांस्टीटयूशन के खिलाफ है यह बात और मैं समझता हूं कि इस पर वज़ीरे-दाखिला साहब ज़रूर, मैं उम्मीद करता हूं कि वे इस पर ज़रूर रिएक्ट करेंगे और अगर ऐसा हो रहा है तो मैं समझता हूं कि यह शर्म की बात है। देखिए यहां पर बहुत सारे अक़लियतों के मसाइल उठाए जाते हैं। कभी-कभी कोई ऐसी बात हो जाती है कि बड़ी तकलीफ का मामला हो जाता है और कहीं-कहीं मैं यह मानता हूं कि अक़लियतों में भी कोई गैर जिम्मेदारी की बात हो जाती है, लेकिन अक्सरियती फिरके का और उस सरकार का ज्यादा फर्ज़ है, जो कि अक्सरियत और अक़लियत को भुलाकर के इस देश में चलने वाले हैं, कि वह सबको लेकर के चले। मैं आज यह बात कहना चाहता हूं, वज़ीरे दाखिला साहब, कि हम बी.जे.पी. की बड़ी सख्त मुखालिफत करते हैं, बी.जे.पी. के जो पूरे प्रोग्राम हैं उनकी मुखालिफत करते हैं, लेकिन मुझे शायद यह यकीन है कि बी.जे.पी. की जहां सरकार है, उसने भी ऐसा काम नहीं किया होगा जैसा काम आपकी सरकार ने किया है। अगर ऐसा है तो इस पर आपको माज़रत करनी चाहिए और अगर ऐसा नहीं है तो आपको कहना चाहिए था कि यह रिपोर्ट गलत है। यह बड़े अच्छे और एक बड़े अखबार में छपी है, "इक्नामिक टाइम्स" में छपी है, सरकार को इस पर रिएक्ट करना चाहिए था लेकिन ऐसी चीजों पर सरकार के कान बंद रहते हैं और जब उसका मौका होता है, उस पर रिएक्ट

करने का या उसको ठीक करने का, तब उसको नहीं किया जाता और मामला कभी-कभी पार्लियामेंट में आता है और पार्लियामेंट से पूरे मुल्क में चला जाता है। इसलिए मैं आपसे दरख्वास्त करता हूं कि अगर यह नाइंसाफी हो रही है, सिर्फ मामला इसी का नहीं है। मैं यह मानता हूं कि अक़लियतों की, खुसुसन मुसलमानों की, सरकारी मुलाज़मतों में तनासुब आजादी के बाद 16 फीसद था। आज मैं वज़ीरे दाखिला साहब, आपसे कहना चाहता हूं और आपके मार्फत पूरी सरकार से कि आज यह घटकर के तनासुब एक, डेढ़ और दो फीसद रह गया है। कुछ सर्विसिज़ आपकी ऐसी हैं, जहां कोई चपरासी भी माइनॉरिटी का नहीं मिलेगा। आप एतमाद करने को तैयार नहीं है और फिर दूसरी तरफ हमारे ऊपर इल्जाम भी है कि साहब, तुष्टिकरण होता है, मुंह भराई होती है। तो मैं कहना चाहता हूं कि सर्विसिज़ में कुछ मिला नहीं है, रिकार्ड गवाह है, बैंकों से जो कर्ज मिलते हैं, आधा परसैंट भी नहीं मिलता, उसके अलावा जो कोआपरेटिव है, उसमें भी हमें कोई हिस्सा नज़र नहीं आता। आज तालीम के अंदर भी अकइलियतें पिछड़ी हुई हैं खासकर के बुद्धिस्ट कम्युनिटी और मुसलमान बहुत ज्यादा तालीम में पिछड़े हुए हैं,

लेकिन उसके बावजूद इल्जाम है कि आप अक़लियतों की मुंह भराई करते हैं। मैं इस इल्जाम को डिनाई भी करता हूं और मैं आपसे दरख्वास्त करना चाहता हूं कि सरकार इस पर सीरियसली गौर करे कि यह अक़लियतों के ऊपर मुंह भराई का जब इल्जाम लगता है तो इस मुल्क के अंदर 70 फीसदी लोग कम पढ़े-लिखे हैं और उसके अंदर हिन्दू भी है, मुसलमान भी है, सिख भी है, ईसाई भी है। जब कोई बात कही जाती है तो एक डायरेक्ट मैसेज जाता है। ...(**समय की घंटी**)... सरकार को चाहिए कि अकलियतों का क्या हिस्सा है, जिंदगी के किस शोबे में, इसके बारे में बकायदा डाटा दे। रोज़ डिनाई करने से काम नहीं चलेगा, आप डाटा दें तभी तो लोगों की समझ में आएगा कि यह इल्जाम झूठा है, अक़लियतों के साथ ऐसा नहीं हो रहा कि उनकी मुंह भराई की जा रही है बल्कि उसके बरअक्स ऐसा हो रहा है कि कहीं-कहीं वे बहुत ज्यादा कमज़ोर होते चले जा रहे हैं। अक़लियतें भी इस मुल्क का एक हिस्सा हैं। यह मुल्क बगैर अक़लियतों के नहीं चलेगा। इस मुल्क में सबको अक़लियतों को साथ लेकर चलना पड़ेगा और जब तब आप उसको साथ नहीं लेंगे, यह [illegible] वाला नहीं है। रोज़ यहां पर गैर जिम्मे[illegible] रहेंगी। मैं उनका ज़िक्र नहीं करना [illegible] ऐसी गैर जिम्मेदाराना बातें होती हैं कि [illegible] कि हम मुसलमान हैं और हमारे किसी मुसलमान ने वैसा काम किया। अभी कश्मीर में जो चल रहा है, जो अभी वहां एक फॉरनर को मारा गया, मुझे हैरत है कि हमारे यहां हिन्दुस्तान में कितनी मुस्लिम लीडरशिप है, लेकिन बहुत कम लोगों ने उसे कंडेम किया। मैं पहला आदमी था जिसने उसको कंडेम किया और मैंने कहा कि यह इस्लाम को मानने वाले नहीं हैं, इस्लाम के नाम पर ये बदनुमा दाग़ हैं और उसको टेलीविज़न ने भी दिखाया, जी टी.वी. ने भी दिखाया और बी.बी.सी. ने भी दिखाया। इसलिए कि इस किस्म के किसी इकदाम की हिमाज़त हासिल करना किसी भी तरह मुमकिन नहीं है।

†[شری محمد افضل عرف م۔ افضل: جاری۔

یعنی بیچاری کمیونٹی کے علاوہ کسی بھی شخص کو نہیں لیا جا رہا ہے۔ اسمیں بہت ساری باتیں لکھی ہیں۔ میں اسکی ڈیٹیل میں نہیں جانا چاہتا اور مناسب بھی نہیں سمجھتا لیکن ڈائرکٹر جنرل نے یہ انٹرویو دیا ہے میں نے سرکار کے ایک وزیر کو جب یہ بات بتائی تو انھوں نے ذمہ داری کے ساتھ کہا کہ ایسا نہیں ہو سکتا۔ ان بیچاروں نے کوشش بھی کی کہ اسکو "ڈنائی" کیا جائے۔ مگر "ڈنائی" نہیں کر اسکے اپنی کوششوں کے باوجود میڈم۔ ایسا نہیں ہے کہ ہم سیدھے سادے میں آ گئے اس معاملہ کو لیکر۔ جو کوشش کر سکتے تھے وہ کی اور جب "ڈنائل" نہیں ہوا تو سوچا کہ اسکو دیس کے سامنے رکھنا چاہئے میں آپکو یاد دلادوں جب ۱۹۴۷ میں ہندوستان آزاد ہوا تو ایسے لوگ

†Transliteration in Arabic script.

تاکہ انکا اعتماد بحال ہو وہ ملک کے جو کام ہیں انمیں برابری سے اپنا حصّہ بٹائیں اور دوسری طرف اندرا جی کا آرڈر دوالا مثال ہے - میں سمجھتا ہوں کہ اندرا جی نے ایک کارڈ کیا تھا اسوقت اور انھوں نے ایک اچھا ڈسیژن "لیا تھا ... لیکن دوسری طرف سرکار ایک سیکیورٹی فورس کے اندر اس قسم کا سلیکٹیو کرے تو یہ بات نہ صرف سیکولرازم کے مترادف ہے - سیکولر قدروں کے مترادف ہے - کانسٹی ٹیوشن کی دفعہ ۱۶ "۲" کے بھی خلاف ہے - جسمیں کہا گیا ہے کہ :]

"No citizen shall on grounds only of religion, caste, sex, descent, place of birth, residence or any of them, be ineligible for, or discriminated against in respect of, any employment or office under the State".

[میڈم - یہ کانسٹی ٹیوشن کا کھلا النگھن ہے - کانسٹی ٹیوشن کے خلاف ہے یہ بات - اور میں سمجھتا ہوں کہ اسپیشل وزیر داخلہ صاحب ضرور میں امید کرتا ہوں کہ وہ اس پر ضرور ری ایکٹ کرینگے اور اگر ایسا ہو رہا ہے تو میں سمجھتا ہوں کہ یہ شرم کی بات ہے - دیکھئے یہاں پر بہت سارے اقلیتوں کے مسائل اٹھائے جاتے ہیں - کبھی کبھی کوئی ایسی بات ہو جاتی ہے کہ بڑی تکلیف کا معاملہ ہو جاتا ہے اور کہیں کہیں میں یہ مانتا ہوں کہ اقلیتوں کا ایک آرڈر تھا - ۱۹۸۲ میں ایک جرنلسٹ کی حیثیت سے اس گورنمنٹ آرڈر کی ایک کاپی مجھے ملی اور میں نے اسے اخبار میں شائع کیا - جسمیں کہا گیا تھا کہ کسی "سینسیٹیو پوسٹ" پر مائناریٹی یا مسلمان کو نہیں رکھا جائے - مسلمان لفظ کا اسمیں استعمال ہوا تھا - مسز اندرا گاندھی کو جب جب یہ بات پتہ لگی اور انکی نالج میں آئی تو انھوں نے خود اسکو ڈراپ کیا اور اسکو ختم کیا -

میڈم - اب اقلیتوں پر اعتماد کرنے کی بات اٹھتی ہے - انکے اعتماد لینے کی بات اٹھتی ہے - میں آپکو یاد دلاؤں کہ ہماری سرکار - جنتا دل کی سرکار کے دوران وزیر اعظم وی - پی - سنگھ صاحب تھے انھوں نے اقلیتی فرقے کے آدمی کو وزیر داخلہ بنایا تھا - ایک پورا اعتماد دینے کی کوشش کی کہ اقلیت یہ نہ سمجھے کہ وہ کوئی آئی سولیٹ ہو رہے ہیں - میں کوئی برائی نہیں کر رہا صرف ایک بات کہنا چاہ رہا ہوں کہ کچھ لوگ اس انداز سے بھی سوچتے ہیں - ایک طرف ایک سرکار سوچتی ہے کہ اقلیتوں کے کسی آدمی کو وزیر داخلہ بنائے

رہی ہے۔ صرف معاملہ اسی کا نہیں ہے میں یہ مانتا ہوں کہ اقلیتوں کی خصوصاً مسلمانوں کی سرکاری ملازمتوں میں تناسب آزادی کے بعد ۱۶ فیصد تھا۔ آج میں وزیر داخلہ صاحب آپ سے کہنا چاہتا ہوں اور آپکی معرفت پوری سرکار سے کہ آج یہ گھٹ کر کے تناسب ڈیڑھ اور دو فیصد رہ گیا ہے۔ کچھ سروسز آپکی ایسی ہیں جہاں کوئی چپراسی بھی مسلمانوں کا نہیں ملے گا۔ آپ اعتماد کرنے کو تیار نہیں ہیں اور پھر دوسری طرف ہمارے اوپر الزام بھی ہے کہ صاحب "نشٹی کرن" ہوتا ہے۔ منھ بھرائی ہوئی ہے۔ تو میں کہنا چاہتا ہوں کہ سروسز میں کچھ ملا نہیں ہے ریکارڈ گواہ ہے بنکوں سے جو قرض ملتے ہیں آدھ پرسنٹ بھی نہیں مل پاتا اسکے علاوہ جو کوآپریٹیو ہیں اسمیں بھی ہمیں کوئی حصہ نظر نہیں آتا آج تعلیم کے اعتبار سے بھی اقلیتیں پچھڑی ہوئی ہیں۔ خاص کر کے بدھسٹ کمیونٹی اور مسلمان بہت زیادہ تعلیم میں پچھڑے ہوئے ہیں۔ لیکن اس کے باوجود الزام ہے کہ آپ اقلیتوں کی منھ بھرائی کرتے ہیں۔ میں اس الزام کو ڈنکے کی چوٹ پر کہتا ہوں اور میں آپ سے درخواست کرنا چاہتا ہوں کہ میں بھی ہمیں کوئی غیر ذمہ داری کی بات ہو جاتی ہے لیکن اقلیتی فرقہ کا اور اس سرکار کا زیادہ فرض ہے جو کہ اکثریت اور اقلیت کو ملا کر اس دیش میں چلنے والے ہیں کہ وہ سب کو لیکر کے چلیں۔ میں آج یہ بات کہنا چاہتا ہوں وزیر داخلہ صاحب کہ ہم بی۔ جے۔ پی۔ کی بڑی سخت مخالفت کرتے ہیں۔ بی۔ جے۔ پی۔ کے جو پورے پروگرام ہیں انکی مخالفت کرتے ہیں۔ لیکن مجھے شاید یہ یقین ہے کہ بی۔ جے۔ پی۔ کی جہاں سرکار ہے اسنے بھی ایسا کام نہیں کیا ہوگا جیسا کام آپکی سرکار نے کیا ہے۔ اگر ایسا ہے تو اس پر آپکو معذرت کرنی چاہئے اور اگر ایسا نہیں ہے تو آپکو کہنا چاہئے تھا کہ یہ رپورٹ غلط ہے۔ یہ بڑے اچھے اور ایک بڑے اخبار میں چھپی ہے "انڈیا ٹوڈے" میں چھپی ہے۔ سرکار کو اس پر ری ایکٹ کرنا چاہئے تھا۔ لیکن ایسی چیزوں پر سرکار کان بند رکھتی ہے اور جب اسکا موقع ہوتا ہے اس پر ری ایکٹ کرنے کا یا اسکو ٹھیک کرنے کا تب اسکو نہیں کیا جاتا اور معاملہ کبھی کبھی پارلیمنٹ میں آتا ہے اور پارلیمنٹ سے پورے ملک میں چلا جاتا ہے۔ اسلئے میں آپ سے درخواست کرتا ہوں کہ اگر یہ ناانصافی ہو

ہیں کہ ہم کو شرم آتی ہے کہ ہم مسلمان ہیں اور ہمارے کسی مسلمان نے ویسا کام کیا ہے۔ ابھی کشمیر میں جو چل رہا ہے جو ابھی وہاں ایک "فارنر" کو مارا گیا۔ مجھے حیرت ہے کہ ہمارے یہاں ھندوستان میں کتنی لیڈر شپ ہے۔ لیکن بہت کم لوگوں نے اسے کنڈم کیا میں پہلا آدمی تھا کہ جسنے اسے کنڈم کیا اور میں نے کہا کہ یہ اسلام کو ماننے والے نہیں ہیں اسلام کے نام پر یہ بدنما داغ ہیں اور اسکو ٹیلی ویژن نے بھی دکھایا۔ ڈی ٹی وی نے بھی دکھایا اور بی بی سی نے بھی دکھایا۔ اسلئے کہ اس قسم کے کسی اقدام کی حمایت حاصل کرنا کسی بھی طرح ممکن نہیں ہے۔

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: लेकिन यह भी सोचना चाहिए कि यह गैर जिम्मेदारियाँ क्यों बढ़ती चली जा रही हैं। आखिर इसकी वजह क्या है, गहराई में जाना चाहिए। कभी-कभी मैं देखता हूं कि हमारे बी.जे.पी. के भाई बड़ा रिएक्ट करते हैं। मैं आपसे भी कहता हूं, कल आपकी भी सरकार हो सकती है। आपको सबको साथ लेकर चलना पड़ेगा। बगैर किसी को साथ लिए चलें तो बहुत प्रोब्लम पैदा होगी, आपके लिए बड़ी तकलीफ होगी।

ڈاکٹر محمد افضل عرفہ - افضل: لیکن یہ بھی سوچنا چاہیئے کہ یہ غیر ذمہ دارانہ باتیں کیوں بڑھتی جارہی ہیں آخر اسکی وجہ کیا ہے گہرائی میں جانا چاہیئے۔ کبھی کبھی میں دیکھتا ہوں

سرکار اس پر سیریسلی غور کرے کہ یہ اقلیتوں کے اوپر منھ بھرائی کا جب الزام لگتا ہے تو اس ملک کے اندر ۷۰ فیصدی لوگ کم پڑھے لکھے ہیں اور ان میں ھندو بھی مسلمان بھی ہیں۔ عیسائی بھی ہیں۔ جب کوئی بات کہی جاتی ہے تو ایک ڈائرکٹ میسیج جاتا ہے۔۔۔ "وقت کی گھنٹی"۔۔۔ سرکار کو چاہیئے کہ اقلیتوں کا کیا حصہ ہے۔ زندگی کے کس شعبہ میں باقاعدہ ڈاٹا دے۔ روز ڈنڈی کرنے سے کام نہیں چلے گا۔ آپ ڈاٹا دیں تبھی تو لوگوں کی سمجھ میں آئے گا کہ یہ یہ الزام جھوٹا ہے۔ اقلیتوں کے ساتھ ایسا نہیں ہو رہا ہے کہ انکی منھ بھرائی کی جارہی ہے۔ بلکہ اس کے برعکس ایسا ہو رہا ہے کہ کہیں کہیں وہ بہت زیادہ کمزور ہوتے چلے جارہے ہیں۔ اقلیتیں بھی اس ملک کا ایک حصہ ہیں۔ یہ ملک بغیر اقلیتوں کے نہیں چلے گا۔ اس ملک میں سب کو اقلیتوں کو ساتھ لیکر چلنا پڑے گا۔ اور جب آپ اسکو ساتھ نہیں لینگے یہ ملک چلنے والا نہیں ہے۔ روز یہاں پر غیر ذمہ دارانہ باتیں ہوتی رہینگی۔ میں الفاظ کو نہیں لکھنا چاہتا کبھی کبھی ایسی غیر ذمہ دارانہ باتیں ہوتی

کہ ہمارے بی۔جے۔پی۔کے بھائی برابر ایک پوائنٹ کرتے ہیں۔میں آپ سے بھی کہتا ہوں۔کل آپ کی بھی سرکار ہو سکتی ہے آپکو سبکو ساتھ لیکر چلنا پڑے گا بغیر کسی کو ساتھ لئے چلیں تو بہت پرابلم پیدا ہوگی۔آپکے لئے بڑی تکلیف ہوگی۔]

श्री सिकन्दर बख्त: चल रहे हैं।...(व्यवधान)

[شری سکندر بخت: چل رہے ہیں

...."مداخلت"...]

श्री संघ प्रिय गौतम: ऐसा नहीं है। हमने उत्तर प्रदेश में मिनिस्टर बनाया।...(व्यवधान) मध्य प्रदेश में मिनिस्टर बनाया, राजस्थान में मिनिस्टर बनाया।...(व्यवधान)

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: मैंने रिप्रजेंटेशन की बात नहीं कही। सिकन्दर बख्त साहब बड़े सीनियर आदमी हैं। शायद हम लोगों में सबसे ज्यादा सीनियर हैं। यह मैंने बात ही नहीं कही।...(व्यवधान) मैड्म, मैंने बहुत दुखी दिल से इस मसले को उठाया है। मैडम, मैं एक बात और कहना चाहता हूं। जब मैं इस मसले को उठा रहा था तो मुझे कई मेरे सीनियर साथियों ने जिनकी मैं बेपनाह रेस्पेक्ट करता हूं यह कहा कि आप यह मामला मत उठाइए, यह किसी दूसरे को उठाने दीजिए। मैं इस किस्म के रवैये को ठीक नहीं समझता हूं। मामला जिसका भी हो और जो भी उठाए, जिसकी समझ में आए उसको उठाने का मौका मिलना चाहिए। मामला उठाते वक्त कभी नहीं सोचना चाहिए कि चूंकि इस मामले को ताल्लुक अकलियतों से है और अगर अफजल साहब ने उठाया है तो इसका कोई रिएक्शन होगा। यह रवैया हमको तबदील करना चाहिए। 23 मेम्बरान जिन्होंने इसमें दस्तखत किए हैं, मैडम्, मैं आपसे दरख्वास्त करूंगा, बहुत सेंसिटिव मामला है, अगर आप मुनासिब समझती हों हमारे मेम्बरान को कुछ को कम से कम इजाजत दें कि वह एक-एक, दो-दो जुमले को इजहार कर दें और उसके बाद वज़ीरे दाखिला रिएक्ट करें। बहुत-बहुत शुक्रिया।

[شری محمد افضل عرف م۔افضل: میں ریزرویشن کی بات نہیں کہی۔سکندر بخت صاحب بڑے سینئر آدمی ہیں۔شاید ہم لوگوں میں سب سے زیادہ سینئر آدمی ہیں یہ میں نے بات ہی نہیں کہی۔"مداخلت" میڈم۔میں نے بہت ہی دکھی دل سے اس مسئلہ کو اٹھایا ہے۔میڈم۔میں ایک بات اور کہنا چاہتا ہوں۔جب میں اس مسئلہ کو اٹھا رہا تھا تو مجھے کئی میرے سینئر ساتھیوں نے جنکی میں بے پناہ "رسپیکٹ" کرتا ہوں یہ کہا کہ آپ یہ معاملہ مت اٹھائیے یہ کسی دوسرے کو اٹھانے دیجئے۔میں اس قسم کے رویہ کو ٹھیک نہیں سمجھتا ہوں۔معاملہ جسکا بھی اور جو بھی اٹھائے جسکی سمجھ میں آئے اسکو اٹھانے کا موقع ملنا چاہئے معاملہ اٹھاتے وقت کبھی نہیں سوچنا چاہئے کہ چونکہ اس معاملہ کا تعلق اقلیتوں سے ہے اور اگر افضل صاحب نے اٹھوایا ہے تو اسکا ری ایکشن ہوگا۔یہ رویہ ہم کو تبدیل کرنا چاہئے۔۲۳ ممبران جنھوں نے اسمیں دستخط کئے ہیں۔میڈم۔میں آپ سے درخواست کرونگا۔بہت "سینسیٹیو" معاملہ ہے اگر آپ مناسب سمجھتی ہوں ہمارے ممبران کو کچھ کو کم سے کم اجازت دیں کہ وہ ایک ایک

[†Transliteration in Arabic script.

دو دو جملے کا اظہار کر دیں اور اسکے بعد وزیر داخلہ ری ایکٹ کریں۔ بہت بہت شکریہ[E]

श्री दिग्विजय सिंह: अगर होम मिनिस्टर साहब बोलें तो हम लोग संतुष्ट हो जाएंगे। हम लोग अपनी तरफ से नहीं बोलेंगे।...(**व्यवधान**) अगर होम मिनिस्टर साहब बोलें तो हम लोग कुछ भी नहीं बोलेंगे।

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी: मैडम्, हम लोग बोलेंगे नहीं, हम होम मिनिस्टर साहब का जवाब चाहेंगे।

[H]مولانا عبید اللہ خاں اعظمی: میڈم۔ ہم لوگ بولینگے نہیں ہم ہوم منسٹر صاحب کا جواب چاہینگے[E]

उपसभापति: आप लोग बैठेंगे तो मैं बोलूंगी।

मौलाना औबैदुल्ला खान आज़मी: होम मिनिस्टर साहब से इसका जवाब चाहेंगे, हम बोलेंगे नहीं।

[H]مولانا عبید اللہ خاں اعظمی: ہوم منسٹر صاحب سے اسکا جواب چاہینگے۔ ہم بولینگے نہیں[E]

उपसभापति: ठीक है, आप बैठ जाइए तो मैं होम मिनिस्टर को बोलूं। अगर आप खड़े रहेंगे तो मैं कैसे बोलूंगी।

श्री एस.एस. अहलुवालिया: मैडम्, मैं भी बोलना चाहता हूं।

मौलाना औबैदुल्ला खान आज़मी: मैडम्, अगर इसमें बोलने की इजाजत दी गई तो हम लोगों को भी इजाजत देनी पड़ेगी।

[H]مولانا عبید اللہ خاں اعظمی: میڈم۔ اگر اسمیں بولنے کی اجازت دی گئی تو ہم لوگوں کو بھی اجازت دینی پڑیگی[E]

[H]Transliteration in Arabic script.

उपसभापति: आप हाऊस में थे नहीं, आपको मालूम नहीं कि क्या तय हुआ था। चेयरमेन साहब के यहां क्या तय हुआ, बिजनेस एडवाइजरी कमेटी में क्या तय हुआ।...(**व्यवधान**)

श्री दिग्विजय सिंह: मैडम्, आपकी सब बात मान ली है। होम मिनिस्टर साहब को बोलवा दीजिए।...(**व्यवधान**)

उपसभापति: आपको नहीं कह रही हूं। जो पीछे मौलाना साहब बैठे हैं उनसे कह रही हूं।

श्री एस. एस. अहलुवालिया: वह हमारी बात नहीं कह सकते, उन्होंने अपनी बात कही है। मैडम्, सब्मिशन है...(**व्यवधान**) उन्होंने हमारी तरफ की बात नहीं कही।...(**व्यवधान**)

श्री दिग्विजय सिंह: आप भी बोलिए, आपको मना नहीं कर रहा हूं। लेकिन होम मिनिस्टर साहब को रिएक्ट तो करने दीजिए...(**व्यवधान**)

श्री एस. एस. अहलुवालिया: मैं भी चाहता हूं कि मेरे सवाल का जवाब होम मिनिस्टर दें।...(**व्यवधान**)

उपसभापति: आप बैठेंगे कृपया, तशरीफ रखेंगे। अहलुवालिया जी, मेरे रूल में सब बराबर हैं। वह मॉयनोरिटी हो, मजोरिटी हो, महिला हो, पुरुष हो। अगर मैं एक को एलाऊ करूं तो मैं दूसरे को भी करूं। चूंकि अफजल साहब ने यह दिया था...(**व्यवधान**)

श्री एस. एस. अहलुवालिया: हर पॉलिटिकल, पार्टी से एक-एक को दीजिए।

उपसभापति: मैंने अभी कितनी बार कहा, मैं रिपीट करती हूं तो हाऊस का टाईम खराब होता है। आप मेरी बात को ध्यान से नहीं सुनते।...(**व्यवधान**) इकबाल सिंह जी, मैं आपकी समस्या को भी समझती हूं। इस पर अगर सब लोग बोलेंगे तो जितने यहां मेंबर्स बैठे हैं, जिन्होंने स्पेशल मेंशन और जीरो ऑवर दिए हैं, आप समझते हैं कि उनके साथ में ज्यादती नहीं करूंगी। क्या यही मसला उठाना है। उनको दूसरे मसले उठाने हैं। अफजल साहब ने विस्तार से सारी मॉयनोरिटी की बात उठाई है। वह इस हाऊस के मेंबर हैं।

श्री एस. एस. अहलुवालिया: नहीं, मैडम्, नहीं उठाई है।

उपसभापति: नहीं उठाई है तो दूसरी बार आप उठा लीजिएगा। यह हाऊस अभी रहने वाला है।

श्री एस. एस. अहलुवालिया: यह मसला जब यहां पर चर्चा का विषय है, तो हमारी कुछ बातें हैं, वह मैं सामने रखना चाहता हूं। उन्होंने जो आंकड़े रखे हैं, डायरेक्टर ने जो गाईड लाईस बनाई हैं, उस गाईड लाईस का जवाब देना चाहता हूं।...(**व्यवधान**)

उपसभापति: एक मिनट प्लीज, आज अगर मैं इन्हें एलाऊ करती हूं तो मेरे पास जो 25 नाम हैं, जो 23 नाम इसमें दिए हैं उसके अलावा मेरे पास 25 नाम स्पेशल मेंशन के हैं। हाऊस डिसाइड कर ले कि अहलुवालिया जी को बोलने दें या नहीं।

श्री दिग्विजय सिंह: हाऊस डिसाइड कर चुका मैडम....(**व्यवधान**)कैसे बोलने दिया जाए-गा?.....(**व्यवधान**)....

श्री एस.एस. अहलवालिया: होम मिनिस्टर हमारी बात सुनेंगे, बाद में जवाब देंगे।...(**व्यवधान**)

श्री दिग्विजय सिंह: आपके नेता यह बात कह दें कि आपने बोलना है।...(**व्यवधान**)...अगर पोलिटिकल पार्टीज से ही बात होनी है तो आपके नेता कहें कि हमारी पार्टी का आदमी बोलेगा।

श्री एस.एस. अहलुवालिया: नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है।...(**व्यवधान**)...

श्री दिग्विजय सिंह: दोनों कैसे होगा? गौतम साहब को उन्होंने बैठा दिया। गौतम साहब को, सिकन्दर बख्त साहब को बैठा दिया जो लीडर ऑफ अपोज़िशन है तो कैसे ऐलाऊ करेंगे आपको बोलने के लिए?...(**व्यवधान**)

श्री सैयद सिब्ते रज़ी: पार्टीज की तरफ से कह दिया जाए कि हमारी पार्टी को भी मौका दिया जाए। मैंने शुरु में ही कह दिया था कि यह संवेदनशील मामला है।...(व्यवधान)

†سید سبط رضی: پارٹیز کی طرف سے یہ کہہ دیا جائے کہ ہماری پارٹی کو بھی موقع دیا جائے۔ میں نے شروع میں ہی کہہ دیا تھا کہ یہ حساس نوعیت کا معاملہ ہے۔"مداخلت"

श्री दिग्विजय सिंह: अरे, आपके नेता हैं कि नहीं हैं? ...(**व्यवधान**)...होम मिनिस्टर साहब को बोलने दीजिए।...(**व्यवधान**)...

श्री सैयद सिब्ते रज़ी: मैं भी अपनी पार्टी की तरफ से बोल रहा हूं। आप अपनी बात क्यों करते हो? हमारी पार्टी को भी बोलने दिया जाना चाहिए।...(**व्यवधान**)...जब ऐसे संवेदनशील मामलात उठाते हैं तो दूसरी पार्टी के लोगों को भी बोलने का मौका दिया जाना चाहिए।...(**व्यवधान**)

†سید سبط رضی: میں بھی اپنی پارٹی کی طرف سے بول رہا ہوں۔ آپ اپنی بات کیوں کرتے ہیں۔ ہماری پارٹی کو بھی بولنے دیا جانا چاہیئے۔۔۔"مداخلت"۔۔۔ جب ایسے حساس نوعیت کے معاملات اٹھاتے ہیں تو دوسری پارٹی کے لوگوں کو بھی بولنے کا موقع دیا جانا چاہیئے۔۔۔"مداخلت"

उपसभापति: अच्छा, एक मिनट। मैं समझ रही हूं।...(**व्यवधान**)...

श्री सैयद सिब्ते रज़ी: देखिए, हमारी पार्टी को भी बोलने का मौका दीजिए।

†سید سبط رضی: دیکھئے ہماری پارٹی کو بھی بولنے کا موقع دیجئے۔

उपसभापति: नहीं. नहीं, यह बात नहीं है कि वे नहीं बोलना चाहते हैं।...(**व्यवधान**) ठहरिए एक मिनट। मैं हाऊस के सामने यह बात छोड़ती हूं। अब हाऊस डिसाइड करे कि इस मुद्दे को, जो मसला अफजल साहब ने उठाया है, इसके अलावा क्या-क्या स्पेशल मेंशन हैं, मैं बोलना चाह रही हूं। श्री भूपेन्द्र सिंह मान, श्रीमती सुषमा स्वराज, श्री मोहम्मद सलीम और श्री रामजीलाल ने फार्मर्स की किलिंग का मामला उठाया है।...(**व्यवधान**)

श्रीमती सुषमा स्वराज: महोदया....

उपसभापति: अब आप बोलिए नहीं। प्लीज़ हाऊस में न बोले। जगमोहन जी ने "Kidnapping/kiling of Army personnel and civilians in Kashmir" उठाया है।

श्री विष्णु कान्त शास्त्री, श्री शंकर दयाल सिंह जी ने पनिशमेंट दु हिंदी स्पीकिंग स्टूडेंट्स उठाया है। ....(**व्यवधान**)...मैं पढ़ूंगी इसलिए कि खाली झगड़ा करने से इस हाऊस का टाइम निकलता है और यह बात चेयर पर डाली जाती है कि चेयर परमिट नहीं करती है। मैंबर परमिट

†Transliteration in Arabic script.

नहीं करते हैं बोलने के लिए इसलिए I am reading it. Let the Members know who is not permitting. I am allowing all of you. श्री सुरेश पचौरी, श्री सत्य प्रकाश मालवीय, प्रो.मल्होत्रा, डॉ. बिप्लव दासगुप्त और श्री अहमद पटेल ने दूसरा मसला, राजीव जी का उठाया है। श्री पराग चालिहा जो अभी यहा आए थे, उन्होंने कुछ उठाया है।

Then there is Yerra Narayana-samy's...(*Interruption*)...

आपकी बात नहीं है, आपका सवाल नहीं है अहलुवालिया जी I..(*Interruptions*)....Ahluwaliaji, you are not above every body else. If you speak, I have to allow everybody else ...(*interruptions*)... No, no; you are not. You are not above everybody else. If I allow you, I have to allow everybody. I have to allow every party. I have to allow every Member who has given his name. My rule is one, one yardstick for everyone. I feel in his wisdom the Chairman has permitted and the hon. Home Minister who is present here, who is also the Leader of the House, Will say something, will find out something and come back to the House with something comprehensive about it. Let him find out. What you are talking about is not going to help until and unless he finds out and comes to the House. अब बोलिए होम मिनिस्टर साहब।

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI S.B. CHAVAN): Madam, this point was raised in the BAC when MR. Afzal was also there. Unfortunately, for the last two days I had been so busy that I could not discuss with any of my officers. I was busy with the other work which I had to do, both in Lok Sabha and Rajya Sabha. But my initial reaction for recruitment to the NSG is it is the State Government who send the names and those names are accepted by the Government, but if they made a discrimination and if they have violated even the Constitutional provisions, certainly I will have to look into it and find out from the Director, NSG, as to why it is so and those State Governments should be told that all the minorities, if they qualify properly, on all counts, be represented. There should be no reason to make any kind of discrimination between a majority and a minority. So, I will take care of it, and I do not think I have any information at this stage with me. I will have to find out from them and thereafter I will definitely come to the House.

श्री एस.एस. अहलुवालिया: मैडम, मैं जानना चाहूंगा मंत्री महोदय से.....(**व्यवधान**).....क्या इन्होंने पंजाब से सिखों के नाम नहीं भेजे? क्या इन्होंने कमांडो.....(**व्यवधान**).....या बी.एस.एफ. के जो लोग मारे गए, उसमें कमांडो और सिखों के नाम नहीं थे? .....(**व्यवधान**) .....मैं यही जानना चाहता हूं।.....(**व्यवधान**).....

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: पंजाब सरकार ने कौन-कौन से नाम भेजे हैं, हम यह जानना चाहते हैं।

مولانا عبیداللہ خاں اعظمی:
پنجاب سرکار نے کون کون سے نام بھیجے
ہیں۔ ہم یہ جاننا چاہتے ہیں۔

1.00 P.M.

उपसभापति: होम मिनिस्टर साहब, सारे ही स्टेट्स से सारे ही माइनोरिटीज के लोगों के बारे में मालुमात करके हाऊस को बता दीजिए क्योंकि मेम्बर्स काफी एजिटेटिड हैं। आप देख रहे हैं 23 लोगों ने इसे कहा है बड़ी मुश्किल से समझा-बुझा कर इनको तैयार किया है कि वे वापस ले लें। सब के दिल में भावना है इसलिए बोल रहे हैं। खाली हाउस में रम्पस मचाने के लिए अहलुवालिया जी, इकबाल सिंह जी, दिग्विजय सिंह जी, सुषमा जी और दूसरे मेम्बरान नहीं बोलना चाह रहे हैं। सवाल उनकी भावना का है। अगर इसमें कहीं एबरेशंस हैं तो आप उसको ठीक कर दीजिए। (**व्यवधान**)

SHRI S.B. CHAVAN: I will look into it, Madam.

उपसभापति: मिस्टर मान नहीं हैं। सुषमा जी आप बोलिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति महोदय,.....

उपसभापति: पहले पूछ लें लंच के लिए .....(**व्यवधान**)

श्री ईश दत्त यादव: लंच कर दीजिए।

(**व्यवधान**)

उपसभापति: लंच कर देंगे तो काम पूरा कैसे करेंगे। (**व्यवधान**)

माननीय सदस्य: आधे घंटे के लिए कर दीजिए। (**व्यवधान**)

उपसभापति: आज यह कम्पलीट करना होगा। **(व्यवधान)**

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी: जुम्मे के दिन हाउस लंच के लिए उठता है ....**(व्यवधान)**

[]مولانا عبیداللہ خاں اعظمی: جمعہ کے دن ہاؤس لنچ کے لئے اٹھتا ہے۔۔۔"مداخلت"

उपसभापति: आप चले जाइयें आपको जाना है तो। **(व्यवधान)**

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: यह परम्परा रही है कि जुम्मे के दिन एक बजे नमाज के लिए हाउस बंद कर दिया जाता है। **(व्यवधान)**

[]مولانا عبیداللہ خاں اعظمی: یہ پریکٹس رہی ہے کہ جمعہ کے دن ایک بجے نماز کیلئے ہاؤس بند کر دیا جاتا ہے۔۔۔"مداخلت"۔۔۔

उपसभापति: मैं यह कह रही हूं कि हाउस को डिसटर्ब मत करिये, काम होने दीजिए। **(व्यवधान)**

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: आपने पूछा था इसलिए मैं कह रहा हूं। मैं कोई डिसटर्ब नहीं कर रहा हूं हाउस को। **(व्यवधान)**

[]مولانا عبیداللہ خاں اعظمی: آپنے پوچھا تھا۔ اسلئے میں کہہ رہا ہوں۔ میں کوئی ڈسٹرب نہیں کر رہا ہوں ہاؤس کو۔۔۔"مداخلت"۔۔۔

श्री सिकन्दर बख्त: आप मेहरबानी करके आज का बिजनैस बता दीजिए। **(व्यवधान)**

[]شری سکندر بخت: آپ مہربانی کرکے آج کا بزنس بتا دیجئے۔۔۔"مداخلت"۔۔۔

उपसभापति: मेरे सामने 19 स्पेशल मैंशंस हैं, प्राइवेट मैम्बर्स बिजनैस है.....**(व्यवधान)** फिर शार्ट ड्यूरेशन डिस्कशन है कश्मीर पर जो लिस्टिड बिजनैस है, कश्मीर पर होम मिनिस्टर साहब कहते हैं कि कल ले लेंगे। **(व्यवधान)**

श्री सिकन्दर बख्त: इसका मतलब यह हुआ कि जीरो अवर, स्पेशल मैंशंस और इसके बाद प्राइवेट मैम्बर्स बिजनैस के बाद हाउस खत्म। **(व्यवधान)**

[]شری سکندر بخت: اسکا مطلب یہ ہوا کہ زیرو آور۔ اسپیشل مینشن اور اسکے بعد پرائیویٹ ممبرس بزنس کے بعد ہاؤس ختم۔۔۔"مداخلت"۔۔۔

उपसभापति: कश्मीर का डिस्कशन अलग से है जिसके बारे में होम मिनिस्टर साहब ने कहा कल ले लेंगे और इसके अलावा एक और शार्ट ड्यूरेशन डिस्कशन है एल,आई.सी. पर। कश्मीर के डिस्कशन को होम मिनिस्टर साहब आज इसीलिए नहीं लेना चाह रहे हैं कि अगर आधा आज और आधा कल लेंगे तो इसकी महत्ता खत्म हो जायेगी। इसलिए इसको कल लेंगे। **(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज: इस दौरान हम स्पेशल मैंशन खत्म कर लेते हैं। (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: It is up to you. It is up to the House.

सैयद सिब्ते रज़ी: इस हाउस की यह परम्परा रही है, कन्वेंशन रही है कि जुम्मे के दिन हम लंच में उठ जाते हैं। पहली बार ऐसा होने जा रहा है.....

[]سید سبط رضی: اس ہاؤس کی یہ پریکٹس رہی ہے۔ کنونشن رہی ہے کہ جمعہ کے دن ہم لنچ کیلئے اٹھ جاتے ہیں۔ پہلی بار ایسا ہونے جا رہا ہے۔۔۔

उपसभापति: पहली बार नहीं पीछे भी ऐसा हुआ था। (व्यवधान)

सैयद सिब्ते रज़ी: अगर पहली बार ऐसा नहीं हो रहा है तो हम प्रेक्टिस को एडॉप्ट करने जा रहे हैं कि हम जुम्मे को नहीं उठा करेंगे। मैं समझता हूं आप चेयर पर हैं और यह सेंसेटिव इशु है। हमेशा ऐसा ही रहा है। अगर यह पहली बार नहीं है इससे पहले भी हुआ है तो हमें इस पर ज्यादा तवज्जो देनी चाहिए। मैं समझता हूं कि एक्सेप्शनल

[]Transliteration in Arabic script.

कभी अगर ऐसा हुआ है तो यह प्रेक्टिस क्यों बनने जा रही है। धीरे-धीरे यह हाउस अपनी कन्वेंशन छोड़ता जा रहा है। हमारा हाउस बहुत ज्यादा आधारित कन्वेंशनों पर है, रूल्स में कुछ चीजें नहीं भी लिखी हुई हैं। लेकिन मैं यह प्रैस करना चाहूंगा कि ऐसी बात नहीं होनी चाहिए जिससे यह आभास बने कि हम शायद कन्वेंशन को बंद करके परम्परा डाल रहे हैं। मैं इस पर अपना आब्जेक्शन रेज करता हूं।

†सैयद सिब्ते रजी: अगर पहली बार ऐसा नहीं हो रहा है तो हम पर्टिकुलर कोई ऐपीट करने जा रहे हैं, कि हम जिद को नहीं अपनाएंगे। मैं समझता हूं आप चेयर पर हैं और यह सेंसिटिव इश्यू है। हमेशा ऐसा ही रहा है। अगर पहली बार नहीं है इस से पहले भी हुआ है तो हमें इस पर ज्यादा तवज्जो देनी चाहिए। मैं समझता हूं कि एक्सेप्शनल केसेज में अगर ऐसा हुआ है तो यह पर्टिकुलर क्यों बनने जा रही है। धीरे धीरे यह हाउस अपनी कन्वेंशन छोड़ता जा रहा है। हमारा हाउस बहुत ज्यादा आधारित कन्वेंशनों पर है, रूल्स में कुछ चीजें नहीं भी लिखी हुई हैं। लेकिन मैं यह प्रैस करना चाहूंगा कि ऐसी बात नहीं होनी चाहिए जिससे यह आभास बने कि हम शायद कन्वेंशन को बंद करके परम्परा डाल रहे हैं। मैं इस पर अपना आब्जेक्शन रेज करता हूं।

†Transliteration in Arabic script

उपसभापति: आप अपना आब्जेक्शन रेज कीजिए। आपको अख्तियार है। आप गण्य-मान्य सदस्य हैं। मगर जब मैं आब्जेक्शन रेज कर रही थी कि इस मामले को जल्दी खत्म कीजिए ताकि हम आगे का बिजनैस कर सकें तो उस वक्त किसी ने मेरा साथ नहीं दिया। आप बताइये मैं क्या करूं। जिसको खाना खाना है वह खाना खा ले, जिस को पूजा-पाठ करना है, नमाज पढ़नी है वह नमाज पढ़ ले और जिसको काम करना है वह काम करे।

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: आपको ऐसा नहीं करना चाहिए, यह गलत बात है। ...(**व्यवधान**)...

†मौलाना अबैदुल्लाह खान आज़मी: आपको ऐसा नहीं करना चाहिये, यह गलत बात है। "मदाखलत"

उपसभापति: देखिए, हम हाउस एडजर्न करते हैं लंच के लिए। लंच आवर में आप फ्री हैं आप चाहे जो करें। खाना खाइए, ना खाइए, आप कुछ भी कर सकते हैं। कृपया इस तरह की बातें न करें। जिसको बोलना है वह बोले, जिसको नहीं बोलना है वह न बोले। जो जाना चाहे वह जा सकता है। मैं मजबूर नहीं कर रही हूं। जिसको बोलना है बोले और जिसको न बोलना हो न बोले। धन्यवाद।

श्रीमती सुषमा स्वराज: महोदया,....

श्री माखनलाल फोतेदार: अब क्या फैसला हुआ?

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House is supreme. I am not supreme. I am just a custodian of this House. If the House agrees, I agree. We have broken conventions and we have made conventions. I am only a custodian of this House. I should not be misunderstood by anybody.

RE: KILLING OF FARMERS AT BHIWANI IN HARYANA

श्रीमती सुषमा स्वराज (हरियाणा): महोदया, बेहद जुल्म और ज्यादती के लिए, पक्षपातपूर्ण तरीके से और अनुचित तरीके से काम करने के लिए हरियाणा की सरकार बहुत कुख्यात है। किन्तु परसों जिस तरीके से हरियाणा के भिवानी जिले के कादमा गांव में हरियाणा सरकार के पुलिस ने निहत्थे किसानों पर अंधाधुंध फायरिंग करके किसानों को मारने का काम किया है, उससे हरियाणा सरकार का माथा शर्म से झुक रहा है और जब कभी ये कलंक [illegible] महोदया, पिछले करीब दो महीनों से ...(**व्यवधान**)